'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 83 (खण्ड- 4) : समकालीन हिंदी कथा- साहित्य में विविध विमर्श
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
January-2019

डॉ. जयप्रकाश कर्दमजी की कहानी ' जहर ' में दलित विमर्श

डॉ. नलिनी डी. कुलकर्णी
विध्यागिरी, धारवाड-०४
(कर्नाटक)

हिन्दी साहित्य अत्यंत समृध्द रहा है। समय समय पर हिन्दी साहित्य में समाज का हुबहू चित्रण देखने को मिलता है। सभी रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में समाज में स्थित दुर्विचार , मान्यता , अन्याय , शोषण , बुरी परंपरा आदि का पर्दाफाश किया है। हिन्दी साहित्य को समृध्द करने में कथा साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचंद के काल से ही दलितों का चित्रण मिलता है। उन रचनाओं में उन पर हो रहे शोषण , अन्याय आदि का चित्रण ही प्रमुख रूप से रहा है। इसक अच्छा उदाहरण 'ठाकूर का कुआँ ' कहानी रही है। रचनाकारों की रचनाओं में स्थित दलित पात्र इसे अपना भाग्य समझकर निशःब्द होकर चुपचाप सहते हैं। आगे आनेवाले दलित कथाकारों ने अपनी रचनाओं में शोषण , अन्याय बुरी परंपरा आदि के चित्रण के साथ साथ इनकी रचानाओं में स्थित दलित पात्रों को अपने अस्तित्व के प्रति सजग , जागरुक के रूप में चित्रित किया है। ये पात्र शोषण , अन्याय का प्रतिकार करते दिखाई देते है।

सन् साठ के आसपास सबसे प्रथम मराठी साहित्य में दलित साहित्य की शुरुवात हुई। बाद में भी दलित साहित्य की रचाना का प्रारंभ हुआ। दलित कथाकारों में डी. पी. वरुण , प्रेम कपाडिया , सत्यप्रकाश , सुशिला टाकभौरे , मोहनदास नैमिशयन आदि के साथ साथ और नाम उभरकर सामने आता है डॉ. जयप्रकाश कर्दमजी का दलित कथा साहित्य के प्रचार प्रसार में इनका योगदान विशेष महत्वपूर्ण रहा है। डॉ. जयप्रकाश कर्दमजी का जन्म ५ जुलाई १९५८ को इंदरगढी गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ। इनके घर की हालत अत्यंत दयनीय थी। छोटे से उम्र में ही इनके पिता का स्वर्गवास होने के कारण परिवार की सारी जिम्मेदारी कर्दमजी के कंधों पर आ गयी। पढाई की इच्छा होने के बावजूद परिस्थिति के कारण ये स्कूल नहीं जा पाये। दिन में पाँच रूपये की रोजगारी पर इन्होंने काम करना शुरु कर दिया और मन में पढाई की तीव्र इच्छा होने कारण रात में दोस्तों से पूछकर पढाई करते रहे अर्थात् ये हार माननेवालों में से नहीं थे। इस तरह से काम और शिक्षा दोनों को कर्दमजी ने अच्छी तरह से निभाया। जो लड़का घर की हालत के कारण स्कूल तक ठीक तरह से जा नहीं सका उसी ने जिद्द से आगे चलकर दर्शनशस्त्र ,हिन्दी तथा इतिहास में एम.ए. की उपाधि हासिल की और इतना ही नहीं हिन्दी हिन्दी साहित्य में अत्यंत गौरवशाली उपाधि पी.एचडी भी हासिल की। केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान , राजभाषा विभाग , गृहमंत्रालय भारत सरकार , नई दिल्ली में निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। तात्पर्य यह है कि मन में अगर उत्कट इच्छा हो तो सफलता मिलती ही है। इसका उदाहरण साक्षात् प्रकाश जी ही रहे हैं। उनकी दृष्टि में कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता उनके लिए काम केवल काम ही होता है चाहे छोटा हो या बड़ा। उदा : जब उनके पिताजी बीमार थे तो प्रकाशजी ने तांगा तक चलाया है। कर्दमजी एक सफल उपन्यासकार , कहानीकार , कवि रहे हैं। उन्होंने अनेकानेक उपन्यास ,कहानी , कविता आदि की रचना की है। 'छप्पर ' कर्दमजी का बहुचर्चित उपन्यास रहा है। कर्दमजी की बहुत चर्चित कहानी रही है ' जहर '।

' जहर ' यह कहानी दलित पात्र को लेकर चलती है अर्थात् इस कहानी का पात्र एक दलित है। इसी कहानी पर विचार करने का मैंने यहाँ अल्पसा प्रयत्न किया है। जहर अर्थात् विषकारी या जानलेवा मतलब जहर की एक बूँद भी आदमी की जान ले सकती है। कभी-कभी किसी के जहरीले शब्द भी आदमी को असहनीय होते हैं और वह आदमी जहरीले शब्दों की चुभन को सह नहीं पाता और अपनी नाराजगी , असमाधान , गुस्सा आदि को व्यक्त करता ही है। ऐसा ही कुछ ' जहर ' इस कहानी में देखने को मिलता है।

PRINCIPAL
Kanashankari Arts, Commerce &
Shantikumar Gubbi Science College,
DHARWAD-580 004.